कविग्राम

वर्ष 2, अंक 5, मई 2021

कारवां बनता गया...

एक अभियान जो नेतृत्वहीन आन्दोलन बन गया

कविग्राम

वर्ष 2, अंक 5, मई 2021

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

शोध तथा संग्रहण
मनीषा शुक्ला
शनि अवस्थी

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

मूल्य
नि:शुल्क

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

सम्पर्क

TheKavigram@gmail.com

8090904560

facebook.com/kavigram

kavigramparivar

youtube.com/c/KaviGram

kavigram.com

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कविग्राम से जुड़ने के लिये इन आइकॉन्स को स्पर्श करें।

सम्पादकीय

समय का जो चेहरा इस समय यह विश्व देख रहा है, उसकी संभवत: मनुष्य ने कल्पना भी नहीं की होगी। लेकिन समय, मनुष्यता का जो आचरण इस समय देख रहा है, उसकी समय ने भी कभी कल्पना नहीं की होगी।

ज्यों ही कोविड के कारण व्यवस्थाएँ चरमराने लगीं और देश में हाहाकार जैसी स्थिति बनने लगी त्यों ही अचानक न जाने कहाँ से बिखरते हुए हौसलों के बीच मनुष्यता की एक ऐसी दीवार खड़ी हो गयी जिसने हर काँपते हाथ को सहारा देकर थाम लिया। जिस सोशल मीडिया को हम समय नष्ट करने का माध्यम मान बैठे थे, उसी सोशल मीडिया पर दर्जनों, फिर सैकड़ों और फिर हज़ारों लोग मदद के लिये दौड़ पड़े। अपने-अपने विवेक और क्षमता के अनुसार जिससे जो हो सका, उसने किया। और जो कुछ भी न कर सका वह अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल से किसी ज़रूरतमंद की गुहार को शेयर करने में तो बिल्कुल पीछे नहीं रहा।

सौ बीज डाले गये तो उनमें से निश्चित रूप से कुछ नष्ट भी हुए होंगे, लेकिन हताशा का रनिवास बन चुकी जिन आँखों में उम्मीद और ख़ुशी की चमक बोने में ये प्रयास सफल हुए हैं, उनके आगे हताशा के हज़ार शहर बौने जान पड़ते हैं। पीड़ितों की मदद करने का यह अभियान देखते ही देखते एक नेतृत्वविहीन आन्दोलन बनता जा रहा है। व्हाट्सएप से लेकर ट्विटर और फेसबुक तक अनवरत 'साथी हाथ बढ़ाना' का अनहद नाद गूंज रहा है। आपको देखकर आश्चर्य होगा कि इस आन्दोलन में दिन-रात लगने वाले अनेक युवा कई-कई दिन से सोए नहीं हैं। कोई अपने परिवार के कष्टों को अनदेखा करके लोगों की मदद में जुटा है तो कोई ख़ुद की बीमारी से आँख चुराकर चीख-पुकार करते लोगों की मदद में संलग्न है। यकायक पूरा देश एक मोबाइल स्क्रीन पर सिमट आया है। किस शहर में कौन क्या मदद कर सकता है, यह इस आन्दोलन में जुटे हर शख़्स को उंगलियों पर याद हो गया है।

दूसरों की मदद करने के चक्कर में कई बार झिड़की भी खानी पड़ी और कई बार फटकार भी झेलनी पड़ी। लेकिन इस सबके बावजूद इनमें से किसी का हौसला नहीं टूटा। ईश्वर इस जज़्बे को बनाये रखे!

तू ज़रा भी साथ दे
तो और बात है

बीता साल हम सबके जीवन में एक अनचाहे अध्याय की तरह जुड़ गया। हम सबने न चाहते हुए भी किसी डरावनी कहानी के क़िरदार की तरह जिया... ये पूरा एक साल। किसी ने नौकरी खोकर महसूस किया कि काग़ज़ के नोट इस वास्तविक दुनिया में आभासी ख़ुशियाँ बटोरने के लिए ही सही, ज़रूरी तो थे। किसी सब्जीवाले की रेहड़ी से हरियाली ग़ायब हुई तो पता चला कि हमारी थाली में भी अब पहले जैसी रंगत तो रही ही नहीं। ऑनलाइन क्लासेस ने बच्चों को इतना बोर किया कि अपनी सबसे खड़ूस टीचर की चढ़ी हुई त्योरियाँ भी उन्हें तिरछे चन्दा मामा जैसी दिखने लगीं। मग़र इन सबके बीच सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति उन लोगों की रही जिन्होंने कोविड-19 नामक इस महामारी में किसी अपने को खो दिया। कितना भोला है मनुष्य! आज से आगे एक क्षण कुछ भी नहीं देख पाता, किन्तु भविष्य के लिए अनगिन योजनाएँ बनाता फिरता है। उस समय हम सबको भी यही लग रहा था कि सचमुच कितना भयावह है 'वर्तमान' का यह स्वरूप। क्योंकि हम नहीं जानते थे कि भविष्य के पास हमारे लिए इससे भी बड़ी चुनौती है, इससे भी बड़ा खेल है और इससे भी पैनी चाल है।

तक़रीबन पिछले साल की तरह ही इस साल भी उसी समय कोविड-19 नामक यह विभीषिका पुनः अपने सर्वाधिक विकराल रूप में प्रकट हुई। मनुष्य की विवशता पर अट्टहास करती हुई मानो उससे कह रही हो — 'पिक्चर अभी बाक़ी है मेरे दोस्त!'

मग़र जब-जब प्रकृति ने मनुष्य को उसकी तुच्छता का आभास कराया है, तब-तब मनुष्य ने प्रकृति का साक्षात्कार मनुष्यता के

ईश्वरीय अंश से कराया है। इस बार हम सब कहीं न कहीं दर्द, तक़लीफ़ और पीड़ा से इतने भर चुके थे कि हमारी संवेदनाओं का छलकना तय था! हम सब छलके... मग़र आँसू बनकर नहीं, करुणा बनकर नहीं, हम छलके उम्मीद की रोशनी से भरकर। किसी के लिए रोने वाला कन्धा बनने से पहले हमने कोशिश की, 'मदद के लिए बढ़ाया गया हाथ' बनने की। पिछली बार जिस सोशल मीडिया का इस्तेमाल हमने लाइव आ-आ कर एक दूसरे के साथ हँसने-हँसाने के लिए किया था, इस बार उसी का सदुपयोग किया गया एक-दूसरे के आँसू पोंछने के लिए। संवेदनाओं की क्या आयु, क्या लिंग, क्या जाति, क्या व्यवसाय, क्या समुदाय! सब एक-दूसरे का दर्द पढ़ रहे थे 'चेहरे की किताब' (फेसबुक) पर। मदद कर रहे थे हाथ से हाथ मिलाकर। कहीं ऑक्सीजन चाहिए थी, ताकि टूटती हुई साँसों की डोर हमारा विश्वास न तोड़ दे। कहीं अस्पताल में बेड चाहिए था, जिस पर दो घड़ी सुस्ताकर ज़िन्दगी फिर से मौत को आँखें दिखा सके। कहीं प्लाज़्मा चाहिए था, ताकि इन्सानियत का रंग फीका न पड़ जाए और कहीं दो वक़्त की रोटी... जो पेट की आग बुझाकर दिमाग़ के इंजन को फिर से पटरी पर ला सके। ताकि हम सोच सके कि आगे क्या करना है? जिसके जितने सम्पर्क, जितनी जान-पहचान, जितनी सामाजिक पहुँच थी सब झोंक दी गयी इस महामारी के विरुद्ध, मनुष्यता के जीवट को बनाए रखने के लिए। कुछ लोग दिन-रात सब भूलकर, बिना किसी राजनैतिक पार्टी को कोसे, बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के यह लेख लिखे जाने तक अथक प्रयास कर रहे हैं, हर ज़िन्दगी को विवशता या अभाववश मौत के मुँह से बचाने के लिए।

ऐसे ही कुछ लोगों को सलाम करते हुए सफलता की कुछ छोटी-छोटी मिसालें कविग्राम आपको बताना चाहता है, ताकि इस कठिन समय को मनुष्यता के इतिहास में इन 'कोशिशों' के लिए याद किया जाए, 'कोरोना' के लिए नहीं।

इति शिवहरे (21 अप्रैल 2021) : कुल 20-22 बरस की मासूम-सी बच्ची का फोन झनझनाता है और दूसरी तरफ नोएडा से मदद की गुहार लगाई जाती है। दिल्ली-नोएडा के किसी भी अस्पताल में ऑक्सीजन बेड चाहिए। क्योंकि मरीज़ का ऑक्सीजन

लेवल 55 पहुँच चुका है। मरीज़ के परिजन को हिम्मत बंधाकर हमारी इति अभी कोशिश शुरु ही करती है कि दोबारा फोन आता है। ऑक्सीजन लेवल 45 आ चुका है, अब आईसीयू बेड के बिना काम नहीं चलेगा। जीवन और मृत्यु इंच-इंच सीना ठोक कर खड़े हैं, एक -दूसरे को मात देने के लिए। उधर पूरियाँ तलते हुए कढ़ाई में खौलते तेल की बेचैनी को अपने छोटे से मस्तिष्क में सहेजे हुए इति बार-बार फोन घुमाती है कि कहीं से तो मदद मिले। इस उधेड़बुन में इति एक हाथ में फोन थामे, दूसरा हाथ कढ़ाई के तेल में डुबा बैठती है। पर अंततः जीत होती है ईमानदारी से की गयी नन्हीं कोशिश की। रात साढ़े-ग्यारह बजे मरीज़ को आईसीयू बेड मिल जाता है और एक लौ तूफ़ान से जंग जीत जाती है।

दुर्गेश तिवारी (22 अप्रैल 2021) : दिल्ली के कवि अमूल्य मिश्रा जी का एक मैसेज दुर्गेश तिवारी के पास आता है कि मेरठ में रेमडेसिविर इंजेक्शन की आवश्यकता है। डिटेल्स आने के बाद दुर्गेश ने सबसे पहले कन्फर्म करने के लिए दिए गए नम्बर पर फोन किया। फोन उठा तो एक घबराई हुई लड़की की आवाज़ सुनाई दी, जो बार-बार कह रही थी — 'मैं आपके हाथ जोड़ती हूँ कुछ मदद करिए!' दुर्गेश, कुशल कुशवाहा और पीयूष मालवीय के साथ मिलकर इंजेक्शन के लिए कोशिश कर ही रहे थे कि थोड़ी देर बाद उस लड़की का पुनः फोन आया और वो रोते हुए बोली — 'इंजेक्शन बाद में ढूंढ़ियेगा, फिलहाल 30 मिनट के अन्दर कहीं से ऑक्सीजन उपलब्ध करा दीजिए, हॉस्पिटल वालों के पास ऑक्सीजन नहीं है, ये हमें हॉस्पिटल से निकाल रहे हैं।' मेरठ के क़रीब नौ दोस्तों से बात करने के बाद भी असफलता ही हाथ आई। पाँच मिनट बाद दोबारा उस लड़की का फोन आया, वह चिल्लाते हुए बोल रही थी कि 'हॉस्पिटल वाले मेरे पापा को मार देंगे ये आईसीयू में ऑक्सीजन बन्द करने जा रहे हैं।' तभी दुर्गेश को इंस्टाग्राम पर एक नम्बर मिला। उन्होंने वहाँ बात की और हॉस्पिटल का नाम बताने पर पता चला कि वह ऑक्सीजन वाला उसी हॉस्पिटल में ऑक्सीजन लेकर जा रहा है। थोड़ी देर बाद अमूल्य जी ने कन्फर्म किया कि ऑक्सीजन पहुँच गयी है। अगले दिन दोपहर में इंजेक्शन की भी दो डोज़ किसी तरह उपलब्ध हो गयी और एक ज़िन्दगी बचा ली गयी।

योगी सूर्यनाथ (23 अप्रैल 2021) : 23 अप्रैल की रात 8:30 बजे लगभग लखनऊ से सूचना मिली कि दो भाई जिनके पिताजी परसों ही दिवंगत हुए, वे दोनों कोरोना पॉज़िटिव हैं। एक ट्रॉमा सेण्टर में ऑक्सीजन के लिये तड़प रहा था और एक लखनऊ के हॉल्डिंग एरिया स्थित किसी रैन बसेरे में अपनी ज़िन्दगी खोज रहा था। इन दोनों भाइयों के साथ एक ही परिजन था जो कि सुबह से भूखा-प्यासा मदद की गुहार लगा रहा था। जैसे ही सूर्यनाथ को सूचना मिली उन्होंने फेसबुक पर उनके नाम से पोस्ट शेयर की और कई ग्रुपों में भी इस संबंध में सूचना डाली। सबसे पहले मरीज़ के लिय भोजन का प्रबन्ध किया। आईपीएस से लेकर दरोगा, विधायक हर स्तर पर कोशिश की लेकिन परिणाम शून्य ही रहा। फिर लखनऊ के एक परिचित से उन्होंने सीएमओ का नम्बर लिया उन्हें फोन करके पूरा विषय उनके सम्मुख रखा और डेढ़ से दो घण्टों में उन तक पूरी सहायता पहुँच गयी।

मनु वैशाली (19 अप्रैल 2021) : ग़ाज़ियाबाद से मदद के लिए एक आवाज़ आयी, जिसमें केवल पेशेंट का नाम और नम्बर था। कुछ नहीं पता था कि क्या चाहिए, क्या दिक्कत है। लिहाजा मनु ने ख़ुद फोन करके पूरी स्लिप बनाई। उसके बाद ये केस सबकी जानकारी में आया! दिक्कत यह थी कि अंकल बहुत टेंशन में थे और रो रहे थे। बता नहीं पा रहे थे उन्हें क्या चाहिए, क्या नहीं। मनु ने ख़ुद उनसे कंटिन्यू दो-तीन बार कॉल करके बात की, तब जाकर पता चला कि ज़रूरत क्या है। उसके बाद हमारी मनु को एक पूरा दिन लग गया इसे हल करने में। मनु ने उनके डॉक्टर से बात की, दवा के सब्स्टिट्यूट के बारे में पूछा। मनु ने दिनभर जाने कितने लोगों को कॉल किया। जिन्हें जानती थी उनको भी, नहीं जानती थी उनको भी। हर छोटे-बड़े इंसान को परेशान किया, जिसका भी नम्बर मिला। ग़ाज़ियाबाद में, नोएडा में, दिल्ली में कहीं पर भी हो जाए। सबने मदद की कोशिश भी की लेकिन फिर भी कुछ नहीं हो पाया था। कुछ लोगों को लगा कि इस केस में दोपहर को ही आवश्यक मदद पहुँच गयी है, लेकिन जब शाम को अपडेट लेते वक़्त उनसे दोबारा बात की गयी तब पता चला कि अब तक कुछ भी नहीं हुआ है। दोबारा डॉक्टर से बात की गई और अंततः उन तक दवा पहुँची।

ऐसे सैंकड़ों लोगों तक इन नन्हें फरिश्तों ने दिन-रात मेहनत करके मदद पहुँचाने में सफलता हासिल की है। आपकी वजह से किसी के सीने में धड़कन बरक़रार है, ये अहसास सन्तुष्टि का चर्मोत्कर्ष है। कविग्राम आप सबसे प्रार्थना करता है, जहाँ तक हो सके एक-दूसरे की मदद करें। मुहब्बत करने के लिए एक लम्हा क़ाफ़ी है और नफ़रत-रंजिश निभाने के लिए पूरी ज़िन्दगी कम पड़ जाती है। फ़ायदे का सौदा कीजिए...शुक्रिया! आभार।

मनीषा शुक्ला

मन में है विश्वास

फेसबुक पर अपील करने के बाद लोगों ने ख़ुद अपना नम्बर हमें भेजा है, कि हम फलाने शहर में किसी के लिये कुछ कर सकें तो हमें ख़ुशी होगी। कहीं कोई डॉक्टर हमें संदेश भेजकर कह रहा है कि यदि किसी को फोन पर कंसल्टेंसी की ज़रूरत हो तो मेरा नम्बर दे देजिये, मैं बिना किसी शुल्क के जो कर सकूंगा, वो करूंगा। कोई यूपीएससी की तैयारी कर रहा होस्टल में रह रहा लड़का बता रहा है कि मैं खाना बनाकर किसी पीड़ित तक पहुँचाने को तैयार हूँ। कानपुर, लखनऊ, बरेली, पीलीभीत, जीन्द, रोहतक, भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, सतना, सागर, उज्जैन, जयपुर, जोधपुर, भीलवाड़ा, मुम्बई, रायपुर, ग़ाज़ियाबाद, मेरठ, गुरुग्राम, दिल्ली, फरीदाबाद और विदेशों से भी लोग तन-मन-धन से हमारे साथ जुड़ते गये और इंटरनेट, तकनीक तथा व्यक्तिगत सम्बन्धों का प्रयोग कर कोविड से त्रस्त लोगों की मदद में जुट गये। जिन कवियों की कविताएँ अभी शैशव काल में हैं उनके भीतर का मनुष्य अचानक इतना विराट हो गया कि उनके व्यक्तित्व का आकार बदल गया। इन सबने अपनी कम-ज़्यादा साधना से जो ख्याति अर्जित की थी उसका पूरा प्रतिफल इस अभियान में झोंक दिया। इसके बदले न तो किसी ने किसी तमगे की अपेक्षा की न ही उसे इस बात की परवाह रही कि इसमें उसके व्यक्तिगत सम्बन्धों का दोहन हो रहा है। बस जुनून-सा लिये अनवरत जुटे रहे। इन देवदूतों को देखकर मन के भीतर रह-रहकर एक गीत गूंज उठता है - **हम होंगे क़ामयाब...!**

कविग्राम

कवि-कुनबा कलैण्डर (मई)

1 मई	जयन्ती	रामेश्वर शुक्ल अंचल
	जन्मदिन	मधुप पाण्डेय Madhup Pandey f
	जन्मदिन	बुद्धिनाथ मिश्र Buddhinath Mishra f
	जन्मदिन	बनज कुमार बनज Banaj Kumar Banaj f
	जन्मदिन	जगबीर राठी Jagbir Rathi f
	जन्मदिन	संजय झाला Sanjay Jhala f
4 मई	जन्मदिन	मुरली कबीर Murali Kabeer f
5 मई	जन्मदिन	नरेन्द्र मिश्र Narendra Mishra f
	जन्मदिन	अशोक सुन्दरानी Ashok Sundarani f
	जन्मदिन	युवराज सिंह युवा Yuvraj Singh Yuva f
6 मई	जन्मदिन	सारस्वत मोहन मनीषी Manishi f
	पुण्यतिथि	बेढब बनारसी
7 मई	जन्मदिन	शबाना शबनम Shabana Shabnam f
	जन्मदिन	सचिन दीक्षित Sachin Dixit f
8 मई	जन्मदिन	मनीष तिवारी Manish Tiwari f
	जन्मदिन	सुनील व्यास Sunil Vyas f
9 मई	जन्मदिन	शीतल वाजपेयी Shital Vajpayee f
	जन्मदिन	पंकज शर्मा Pankaj Sharma f
	पुण्यतिथि	मधुमिता शुक्ला
10 मई	जन्मदिन	राकेश सोनी Rakesh Soni f
	जन्मदिन	पंकज फनकार Pankaj Fankar f
11 मई	जन्मदिन	दिनेश सिंदल Dinesh Sindal f
	जन्मदिन	वेणुगोपाल भट्टड़ Venugopal f
	पुण्यतिथि	इन्द्रजीत सिंह तुलसी
13 मई	पुण्यतिथि	बालकवि बैरागी
14 मई	जयन्ती	मनोहर लाल रत्नम
	जन्मदिन	तुषा शर्मा Tusha Sharma f
16 मई	जन्मदिन	बालस्वरूप राही
	पुण्यतिथि	उर्मिलेश शंखधर
17 मई	जयन्ती	अल्हड़ बीकानेरी
	जन्मदिन	सुरेन्द्र सुकुमार Surendra Sukumar f
18 मई	जन्मदिन	उदय प्रताप सिंह Uday Pratap Singh f
20 मई	जयन्ती	सुमित्रानन्दन पन्त
	जन्मदिन	महेन्द्र शर्मा Mohinder Sharma f
	जन्मदिन	शरीफ़ भारती Sharif Bharti f
	पुण्यतिथि	गयाप्रसाद शुक्ल सनेही
	जन्मदिन	शशांक प्रभाकर Shashank Prabhakar f

कवि-कुनबा कलैण्डर (मई)

20 मई	जन्मदिन	प्रमोद पवैया Pramod Pabaiya f
21 मई	जयन्ती	शरद जोशी
22 मई	जन्मदिन	जानी बैरागी Jani Bairagi f
23 मई	जयन्ती	मोहन सोनी
24 मई	जन्मदिन	हरिओम पँवार Hari Om Panwar f
26 मई	जन्मदिन	मुकुल महान Mukul Mahan f
27 मई	जन्मदिन	चिराग़ जैन Chirag Jain f
28 मई	जन्मदिन	बलवन्त बल्लू Balwant Ballu f
	पुण्यतिथि	गोपाल प्रसाद व्यास
29 मई	जयन्ती	शेरजंग गर्ग
	जयन्ती	हुल्लड़ मुरादाबादी
30 मई	पुण्यतिथि	कृष्ण बिहारी नूर

सम्पादकीय टिप्पणी

कविग्राम ने अपने पाठकों को सूचित किया था कि मई माह का अंक **गुमनाम कवि मशहूर कविता** विशेषांक होगा। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों के कारण कोविड-19 की आकस्मिक आपदा के चलते हमें अंक का विषय बदलना पड़ा। पूर्व निर्धारित विशषांक शीघ्र ही पाठकों को पढ़ने को मिलेगा।

— कुछ आवश्यक सूचनाएँ —

कविग्राम पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया का कोई आईकॉन बना दिखे वह एक **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लिंक** है। उसे स्पर्श करने पर आप उस पृष्ठ से सम्बद्ध इंटरनेट पेज पर पहुँच जाएंगे।

कविग्राम के व्हाट्सएप नम्बर से हर महीने के अन्त तक नया अंक प्रेषित कर दिया जाता है। यदि किसी तकनीकी कारणवश **आपको नया अंक न मिले तो** कृपया हमें इसकी सूचना दें। हम आपको अंक पुन: प्रेषित करेंगे।

यदि आप लेखक हैं तो अपनी रचना केवल कविग्राम की ईमेल पर भेजें। व्हाट्सएप पर प्रेषित की गयी रचना स्वीकार नहीं की जायेगी। पद्य का विषय कुछ भी हो सकता है किन्तु गद्य केवल कवि-सम्मेलन, कवि-जीवन तथा काव्य के इर्द-गिर्द ही स्वीकार किया जायेगा।

कर्मवीर

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं
रह भरोसे भाग्य के दु:ख भोग पछताते नहीं
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं
हो गये इक आन में उनके बुरे दिन भी भले
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही
सोचते कहते हैं जो कुछ, कर दिखाते हैं वही
मानते जो भी हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत् में आप ही
भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिये
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर
वे घने जंगल, जहाँ रहता है तम आठों पहर
गर्जते जलराशि की उठती हुई ऊँची लहर
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लपट
ये कँपा सकती कभी जिसके कलेजे को नहीं
भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

बिना थके बिन हारे

बिना थके, बिन हारे
मैंने जीवन समर लड़ा रे

बीहड़ जंगल, मीलों सहरा
उथली चाहत, अपयश गहरा
आंधी, अग्नि, पत्थर, पानी
कड़वा बचपन, दर्द-जवानी
क्या-क्या नहीं सहा रे, मैंने जीवन समर लड़ा रे

तेरा भी दु:ख, मेरा भी दु:ख
दु:ख के भीतर ही ढूंढ़ा सुख
लम्हा-लम्हा, दुखड़ा-दुखड़ा
तिनका-तिनका, टुकड़ा-टुकड़ा
टूटा, कभी बना रे, मैंने जीवन समर लड़ा रे

सपने छूटे, अपने छूटे
सिर पर बीसों पर्वत टूटे
जागा, तो तक़दीर सो गयी
नाव मिली, पतवार खो गयी
रूठे रहे किनारे, मैंने जीवन समर लड़ा रे

मूढ़ों के माथे पर चन्दन
अदनों का देखा अभिनन्दन
जाने कितनी बार डरा मन
जाने कितनी बार भरा मन
लेकिन नहीं मरा रे, मैंने जीवन समर लड़ा रे

नरेश शांडिल्य

उस दिन हमें अलग होना था

उस दिन उसके सारे आँसू गंगाजल में बदल रहे थे
उस दिन उसके होंठ गुलाबी, नीलकमल में बदल रहे थे
उस दिन आँखों के सपने काले बादल में बदल रहे थे
उस दिन हम दोनों के निर्णय, अन्तिम पल में बदल रहे थे

उस दिन कुछ पाने की आशा नहीं, मग़र सब कुछ खोना था
उस दिन हमें अलग होना था

उस दिन उसकी दो आँखों में अनबोये बबूल उग आये
उस दिन आँखें पछताती थीं, क्यों सपने फिज़ूल उग आये
उस दिन दोनों के चेहरों पर चारों तरफ़ शूल उग आये
उस दिन जहाँ गिरे थे आँसू, फौरन वहाँ फूल उग आये

उस दिन पता चला था हमको फूल नहीं, आँसू बोना था
उस दिन हमें अलग होना था

उस दिन दोनों हर दुविधा को कर स्वीकार लिपट रोये थे
उस दिन दोनों जग से छिपकर नदिया पार लिपट रोये थे
उस दिन हर पर ख़ुश रहने वाले त्योहार लिपट रोये थे
उस दिन दोनों पहले-पहले अन्तिम बार लिपट रोये थे

उस दिन की यादों को सारे जीवन दोनों को ढोना था
उस दिन हमें अलग होना था

ज्ञानप्रकाश आकुल

सूना आसमान

सूनी-सूनी धरती लागै, सूना आसमान
सूनी-सूनी बगिया लागै, सूना बाग़वान

गाँवन की हरियाली मिटिगै उजरि गए सब बाग़
सब उजार भा कहै कोयलिया कइसे छेड़ी राग
मनई भा विनाश का कारन दिहस न तनिक्यो ध्यान

पइसा के लालच मा कटि गए हरे-भरे सब बिरवा
जीव-जन्तु छाँही का तरसैं मर गई चिरई-चिरवा
पर्यावरण बिगड़ गओ सगरा, दु:खी भवा इन्सान

आज काल बिन आतिशबाजी कवना काम न होवै
बिना प्रदूषण फैलाये शहरन कै शाम न होवै
डीजै-वीजै सुनि-सुनि फूटै सब काहू का कान

बढ़ गयी है जनसंख्या जब ते पूर परै ना पानी
बढ़ी जात हिमवान सरीखी अदमिन कै नादानी
अपनक दोषी कहै न कोई, दोषी है भगवान

भला अगन्तुक वे जो अपना सबका भला मनावै
ऊसर धरती जवन पड़ी है ऊका हरी बनावै
भइया अपन बनायो लरिका बढ़िया कुशल किसान

छोट-मोट झगड़ा घर कै सब घरहिन मा निपटाये
थाना और कचहरी खातिर भूल शहर ना आए
मिलजुलि के सब रहेव प्रेम से राम और रहमान

प्रज्ञा वाजपेयी

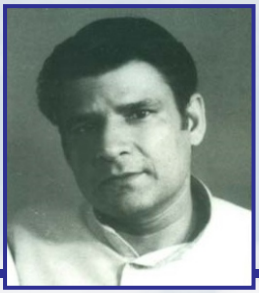

मैं बेक़रार हूँ

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तो
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है

तुम्हारे पाँव के नीचे कोई ज़मीन नहीं
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यक़ीन नहीं

तुमने इस तालाब से रोहू पकड़ने के लिये
छोटी-छोटी मछलियाँ चारा बनाकर फेंक दी

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

वो मुतमइन है कि पत्थर पिघल नहीं सकता
मैं बेक़रार हूँ, आवाज़ में असर के लिये

खड़े हुए थे अलावों की आँच लेने को
सब अपनी-अपनी हथेली जला के बैठ गये

रौनक़-ए-जन्नत ज़रा भी मुझको रास आयी नहीं
मैं जहन्नुम में बहुत ख़ुश था मेरे परवरदिगार

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं

दुष्यन्त कुमार

पार जाने का समय है

ध्वंस मुँह बाये खड़ा है, मृत्यु का पहरा कड़ा है
घाट धू-धू जल रहे हैं, हर लहर मातम जड़ा है
यह बिखरने का नहीं, हिम्मत जुटाने का समय है
मौत के पंजे से जीवन छीन लाने का समय है

मृत्यु का विकराल वैभव इस जगत् पर छा चुका है
आँसुओं के अर्घ्य से कब काल का ताण्डव रुका है
अब हमें अड़ना पड़ेगा, अनवरत बढ़ना पड़ेगा
श्वास पर विश्वास रखकर , यह समर लड़ना पड़ेगा
आत्मबल से भाग्य का रुख मोड़ आने का समय है
मौत के पंजे से जीवन छीन लाने का समय है

चाह अमृत की रखी पर, विष उलीचा है जलधि ने
सृष्टि भर के प्राण दूभर कर दिये फिर से नियति ने
काल प्रलयंकर बना है, मृत्यु हर कंकर बना है
जब हवा में विष घुला है, तब कोई शंकर बना है
फिर इसी जलधाम से अमृत जुटाने का समय है
मौत के पंजे से जीवन छीन लाने का समय है

अपशकुन पर ध्यान क्यों दें, हम शकुन के गीत गायें
इस अन्धेरे से डरें क्यों, क्यों न इक दीपक जलायें
हर लहर का क्रोध फूटे, साथ जीवट का न छूटे
सिर्फ़ हिम्मत साथ रखना; टूटती हो नाव, टूटे
यह प्रलय पर पाँव रखकर पार जाने का समय है
मौत के पंजे से जीवन छीन लाने का समय है

चिराग़ जैन

सतयुग का सपना

एक रात की बात है श्रीमान्
मेरी आँखों ने देखा
सतयुग का सपना महान।
महिलाएँ रात में भी
खुले-आम घूम रही हैं
उनके शरीर पर सोने के गहने हैं
पुलिस की भी वर्दी बदल गयी है
वो सफेद धोती-कुर्ता पहने हैं।
और उनके हाथ में डण्डे की जगह
रुद्राक्ष की माला है
यह इसका प्रतीक है
कि यह पुलिसवाला है।
पुलिसवाले अपनी ड्यूटी
पूरी ईमानदारी से निभाते हैं
सतयुग है ना, इसलिये गश्त पर सीटी नहीं बजाते
राम-राम चिल्लाते हैं।

मन्दिर और मस्जिद खचाखच भरे हैं
मयख़ाने और सिनेमा हॉल ख़ाली पड़े हैं।
जिसे देखो सत्कर्म करके पुण्य कमा रहा है
और वो अपना दाउद इब्राहिम
प्रायश्चित के तौर पर रिक्शा चला रहा है।

घरों के दरवाज़े खुले पड़े हैं
चोर, चोरी नहीं करना चाहते, चुपचाप खड़े हैं।

आपको विश्वास नहीं होगा श्रीमान्
लोगों का ईमान इस क़दर जगा है
कि तालों की फैक्ट्री में ताला लगा है।

लोग पुण्य कमाने के लिये
भिखारियों का निमन्त्रण करने लगे हैं
निमन्त्रण देने वालों की लाइन लगी है
भिखारी दोनों टाइम बुक हैं
उनके पास डेट ख़ाली नहीं है।

कोई सर्राफ़े में जाकर पूछता है सोने का भाव
दुकानदार कहता – 'सौ रुपये पाव,
पैसे नहीं हों तो बाद में दे देना
अभी ले जाओ!'

हर हिन्दुस्तानी
अपने आपको
कुछ ज़्यादा ही गौरवान्वित महसूस कर रहा है
क्योंकि अपना एक रुपया
अमेरिका के सत्तर डॉलर में चल रहा है।

और वाह-वाह रे मेरे सपने
मानवता की सेवा में
बहुत बड़ा काम कर रहे हैं
सारे के सारे आतंकवादी
कोरोना पेशेंट्स के लिये
ऑक्सीजन सिलेंडर का इन्तज़ाम कर रहे हैं।

आप लोग सोच रहे होंगे
मैं क्या उल्टी-पलटी फेंक रहा हूँ
मग़र यह सच है दोस्तो!
मैं वर्षों से यही सपना देख रहा हूँ।

● राजेन्द्र मालवीय आलसी

लालक़िले से काव्यपाठ करते
श्री राजेन्द्र राजन
ऊपर वर्ष 1989 नीचे वर्ष 2019
(चित्र साभार : हिन्दी अकादमी, दिल्ली)

(चित्र सौजन्य : डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र)

चिकित्सा का चक्कर

मैं बिलकुल हट्टा-कट्टा हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। पर मेरी कहानी किसी भारतीय विधवा से कम करुण नहीं है, यद्यपि मैं विधुर नहीं हूँ। मेरी आयु लगभग पैंतीस साल की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा था। लोगों को बीमार देखता था तो मुझे बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। यह तो न था कि मेरे बीमार होने पर भी दिन में दो-बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे लिये बीमार पड़ने पर हंटले पामर के बिस्कुट (जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते) खाने को मिलते। 'यू.डी. कलोन' की शीशियाँ सिर पर कोमल करों से बीवी उड़ेलकर मलती और सबसे बड़ी इच्छा तो यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारण करके पूछते- 'कहिए, किसकी दवा हो रही है? कुछ फ़ायदा है?' जब कोई इस प्रकार से रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता है तब मुझे बड़ा मज़ा आता है और उस समय मैं आनन्द की सीमा के उस पार पहुँच जाता हूँ।

हाँ, तो एक दिन हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेंट ज़रा ज़्यादा खा गया था इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल में मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा, 'विशेष न सही, साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था। संभव है मेरे आने में देर हो।' मैंने फिर इनक़ार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज़ वाली आध पाव मलाई। मलाई खा चुकने के बाद पता चला कि 'प्रसाद' जी के यहाँ से बाग़-बाज़ार का रसगुल्ला आया है। रस तो

होगा ही। कल संभव है, कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगलकर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे। एकाएक तीन बजे रात को नीन्द खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सुइयाँ लेकर कोंच रहा है। परन्तु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण, अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैंने तुरन्त उसकी कुछ बून्दें पान कीं। दो बार दवा पी। तिबारा। पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा की सार्थकता उसी समय मुझे मालूम हुई। प्रातःकाल होते-होते शीशी समाप्त हो गयी। दर्द में किसी प्रकार कमी न हुई। प्रातःकाल एक डॉक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।

रायबहादुर डॉक्टर विनोद बिहारी मुखर्जी यहाँ के बड़े नामी डॉक्टर हैं। पहले जब प्रैक्टिस नहीं चलती थी तब आप लोगों के यहाँ मुफ़्त जाते थे। वहाँ से पता चला कि डॉक्टर साहब नौ बजे ऊपर से उतरते हैं। इसके पहले वे कहीं जा नहीं सकते। लाचार, दूसरे के पास आदमी भेजना पड़ा। दूसरे डॉक्टर साहब सरकारी अस्पताल के सब-असिस्टेंट थे। वे एक इक्के पर तशरीफ़ लाये। सूट तो वे ऐसा ही पहने हुए थे कि मालूम पड़ता था, प्रिंस ऑफ वेल्स के वेलेटों में हैं। ऐसे सूट वाले का इक्के पर आना वैसा ही मालूम हुआ जैसा लीडरों का मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कह पाया था कि आप बोले, 'जनाब, दिखाइए।' प्रेमियों को जो मज़ा प्रेमिकाओं की आँखें देखने में आता है, शायद वैसा ही डॉक्टरों को मरीज़ों की जीभ में आता है। डॉक्टर महोदय मुस्कराए। बोले, 'घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए। दो ख़ुराक़ पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही ग़ायब हो जायेगा, जैसे हिन्दुस्तान से सोना ग़ायब हो रहा है।' मैं तो दर्द से बेचैन था। डॉक्टर साहब साहित्य का मज़ा लूट रहे थे। चलते-चलते बोले, 'अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मंगानी न पड़ती। ख़ैर, चन्द्रकला फॉर्मेसी से दवा मंगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताज़ा मिलती हैं। बोतल में पानी गर्म करके सेंकिएगा।' दवा पी गयी। गर्म बोतलों से सेंक भी आरंभ हुई। सेंकते-सेंकते छाले पड़ गए। पर दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुई, शाम हुई। पर दर्द में कमी न हुई, हटने का नाम तो दूर। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा।

ऐसे-ऐसे लोग आये कि कहाँ तक लिखें। हाँ, एक विशेषता थी। जो आता एक न एक नुस्खा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा, अजी, कुछ नहीं हींग पिला दो। किसी ने कहा, चूना खिला दो। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज़ बाक़ी नहीं रह गयी जो लोगों ने न बताई हो। यदि भारत सरकार को मालूम हो जाए कि देश में इतने डॉक्टर हैं तो निश्चय है कि सारे मेडिकल कॉलेज तोड़ दिए जाएँ। इतने ख़र्च की आख़िर आवश्यकता ही क्या है?

कुछ समझदार लोग भी आते थे, जो इस बात की बहस छेड़ देते थे कि असहयोग-आन्दोलन सफल होगा कि नहीं, ब्रिटिश नीति में कितनी सच्चाई है, विश्व आर्थिक सम्मेलन में अमेरिका का भाषण बहुत स्वार्थपूर्ण हुआ, इत्यादि। मैं इस समय केवल स्मरण-शक्ति से काम ले रहा हूँ। तीन दिन बीत गये। दर्द में कमी न हुई। कभी-कभी कम हो जाता था, बीच-बीच में ज़ोरों का हमला हो जाता था, मानो चीन-जापान का युद्ध हो रहा हो। तीसरे दिन तो यह मालूम होता था कि मेरा घर क्लब बन गया है। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर चर्चा छिड़ती थी कि पंडित बनारसीदास ने इस बार किसको पछाड़ा, प्रसाद जी का अमुक नाटक स्टेज की दृष्टि से कैसा है, हिन्दी के दैनिक पत्रों में बड़ी अशुद्धियाँ रहती हैं, अब देश में अनार्किस्ट नहीं रह गए हैं, लॉर्ड विलिंग्डन अब ब्रुक बांड चाय नहीं पीते, छतारी के नवाब टेढ़ी टोपी क्यों लगाते हैं और राय कृष्णदास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनवाते हैं; अर्थात् लॉर्ड विलिंग्डन और महात्मा गांधी से लेकर रामजियावन लाल पटवारी तक की आलोचना यहाँ बैठकर लोग करते थे। और यहाँ दर्द की वह दर्दनाक हालत थी कि क्या लिखूँ। मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था। ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी हो। बीच-बीच में लोग दवा की सलाह और डॉक्टर बदलने की सलाह और कौन डॉक्टर किस तरह का है, यह बतलाते जाते थे।

आख़िर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे। किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डॉक्टर चूहानाथ कतरजी को बुलाने की सबकी सलाह हुई। आप लोग डॉक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे। पर यह मेरा दोष नहीं है। डॉक्टर साहब के माँ-बाप का दोष है। यदि मुझे उनका नाम रखना होता तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। परन्तु ये यथानाम तथागुण। आपकी

फीस आठ रुपये थी और मोटर का एक रुपया अलग। आप लंदन के एफआरसीएस थे। कुछ लोगों का सौंदर्य रात में बढ़ जाता है, डॉक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। ख़ैर, डॉक्टर साहब बुलाए गये। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले, मिनटों में दर्द ग़ायब हुआ जाता है, थोड़ा पानी गरम कराइए, तब तक यह दवा मंगवाइए। एक पुर्ज़े पर आपने दवा लिखी। पानी गर्म हुआ। दो रुपये की दवा आई। डॉक्टर बाबू ने तुरन्त एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सूई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सूई कोंचकर दवा डाली।

यह कह देना आसान है कि मेरा कलेजा निगाहों के नेजे के घुस जाने से रेजा-रेजा हो गया है, अथवा उनका दिल बरुनी की बरछियों के हमले से टुकड़े-टुकड़े हो गया है, पर अगर सचमुच एक आलपिन भी धँस जाए तो बड़े-बड़े प्रेमियों की नानी याद आ जाए। प्रेमिकाएँ भूल जाएँ। डॉक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गये। इसके बाद मुझे नीन्द आ गई और मैं सो गया। मेरी नीन्द कब खुली कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रातःकाल पीड़ा रफ़ूचक्कर हो गयी थी। कोई दो सप्ताह मुझे पूरा स्वस्थ होने में लगे। बराबर डॉक्टर चूहानाथ कतरजी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती रही। दवा के स्वाद का क्या कहना। शायद मुर्दे के मुख में डाल दी जाए तो वह भी तिलमिला उठे। पन्द्रह दिन के बाद मैं डॉक्टर साहब के घर गया। उन्हें धन्यवाद दिया। मैंने पूछा कि अब तो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले, 'यह तो आपकी इच्छा पर है। पर यदि आप काफी एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा। यह दर्द मामूली नहीं था। असल में आपको 'सीलियो सेंट्रिक कोलाइटीज' हो गया था। और उससे 'डेवेलप' कर 'पेरिकार्डियल हाइड्रेट्यूलिक स्टमकालिस' हो जाता, फिर ब्रह्मा भी कुछ न कर सकते। मालूम होता है कि आपकी श्रीमती बड़ी भाग्यवती हैं। अगर छह घण्टे की देर और हो जाती तो उन्हें ज़िन्दगी भर रोना पड़ता। वह तो कहिए कि आपने मुझे बुला लिया। अभी कुछ दिनों आप दवा कीजिए।' डॉक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्ज़ों के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे ऐसे मर्ज़ हुए जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते।

मालूम नहीं, ये मर्ज़ सब डॉक्टरों को मालूम हैं कि केवल हमारे डाक्टर चूहानाथ को ही मालूम हैं। ख़ैर, दवा जारी रखी।

अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दो बजे एकाएक फिर दर्द रूपी फौज ने मेरे शरीर रूपी क़िले पर हमला कर दिया। डॉक्टर साहब ने जिन-जिन भयंकर मर्ज़ों का नाम लिया था उनका स्वरूप मेरी तड़पती हुई आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हुआ हमला किसी उन्हीं में से एक मर्ज़ का। तुरन्त डॉक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि इंजेक्शन का सामान लेकर चलिए। वहाँ से आदमी बिना मांगी पत्रिका की भाँति लौटकर आया कि डॉक्टर साहब कहीं गये हैं। इधर मेरी हालत क्या थी उसका वर्णन यदि सरस्वती शॉर्टहैंड से भी लिखें तो संभवत: समाप्त न हो। एयरोप्लेन के पंखे की तेज़ी के समान करवटें बदल रहा था। इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी कि अब कौन बुलाया जाए, पर 'डिसार्मामेंट कांफ्रेंस' की भाँति कोई न किसी की बात मानता था, न कोई निश्चय ही हो पाता था। मालूम नहीं, लोगों में क्या बहस हुई, कौन-कौन प्रस्ताव फेल हुए, कौन-कौन पास। जहाँ मैं पड़ा कराह रहा था उसी के बगल में लोग बहस कर रहे थे। कभी-कभी किसी-किसी की चिल्लाहट सुनाई दे जाती थी। बीमार मैं था, अच्छा-बुरा होना मुझे था, फीस मुझे देनी थी, परंतु लड़ और लोग रहे थे। मालूम होता था कि उन्हीं लोगों में से किसी की ज़मींदारी कोई जबरदस्ती छीने लिए जा रहा है। अन्त में हमारे मकान के बगल में रहने वाले पंडित जी की विजय हुई और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञ-रंजन, चिकित्सा-मार्तण्ड, प्रमेह-गज-पंचानन, कविराज पंडित सुखड़ी शास्त्री के बुलाने की बात तय हुई। आधा घण्टा तो बहस में बीता। ख़ैर, किसी तरह से कुछ तय हुआ। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गये। कोई पैंतालीस मिनट बीत गए, परन्तु वहाँ से न वैद्य जी आए, न भेजे गए सज्जन का ही पता चला। एक ओर दर्द इनकम टैक्स की तरह बढ़ता ही चला जा रहा था, दूसरी ओर इन लोगों का भी पता नहीं। और भी बेचैनी बढ़ी। अन्त में जो साहब गये थे वे लौटे, वैद्य जी ने बड़े ग़ौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुध-क्रांति-वृत्त में शनि की स्थिति है, इकतीस पल नौ विपल में शनि बाहर हो जाएगा और डेढ़ घड़ी एकादशी का योग है, उसके समाप्त होने पर मैं चलूंगा। आप आधा घंटा में आइएगा। सुनकर

मेरा कलेजा कबाब हो गया। मग़र वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था। मैंने फिर उन्हें भेजा। कोई आधे घंटे बाद वैद्य जी एक पालकी पर तशरीफ़ लाए। आकर आप मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए। आप धोती पहने हुए थे और कन्धे पर एक सफेद दुपट्टा डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त शरीर पर सूत के नाम पर केवल जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्य जी ने कुछ और न पूछा — पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले, 'वायु का प्रकोप है, यकृत से वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर अंत्र में जा पहुँची है। इससे मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है और इसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है तब शूल का कारण होता है। संभव है, मूत्राशय में अश्म भी एकत्र हो।' कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध से एक दूसरे ही संसार में हो रही थी। आख़िर मुझसे रहा न गया। मैंने एक सज्जन से कहा, 'ज़रा आलमारी में से आप्टे का कोष तो लेते आइए।' यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं अपने होश में नहीं हूँ। मैंने कहा, 'दवा तो पीछे होगी, मैं पहले समझ तो लूँ कि मुझे रोग क्या है?' पंडित जी कहने लगे, 'बाबू साहब, देखिए आजकल के नवीन डॉक्टरों को रोगों का निदान तो ठीक मालूम ही नहीं, चिकित्सा क्या करेंगे। अंग्रेजी पढ़े-लिखों का वैद्यक-शास्त्र पर से विश्वास उठ गया है। परंतु हमारे यहाँ ऐसी-ऐसी औषधियाँ हैं कि एक बार मृत्युलोक से भी लौटा लें। मुहूर्त मिल जाना चाहिए। और अच्छा वैद्य मिल जाना चाहिए।' इसके पश्चात वैद्य जी चरक, सुश्रुत, रसनिघंटु, भेषजदीपिका, चिकित्सा-मार्तण्ड के श्लोक सुनाने लगे। और अंत में कहा, 'देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा। परंतु इसके पश्चात आपको पर्पटी का सेवन करना होगा। क्योंकि आपका शुक्र मंद पड़ गया है। गोमूत्र में आप पर्पटी का सेवन कीजिए, फिर देखिए दर्द पारद के समान उड़ जाएगा और गंधक के समान भस्म हो जाएगा। लिखा है — गोमूत्रेण समायुक्ता रसपर्पटिकाशिता। मासमात्रप्रयोगेण शूलं सर्वे विनाशयेत्॥'

मैंने कहा, 'शुक्र अस्त नहीं हो गया, यही क्या कम है। पंडित जी, गोमूत्र पिलाइए और गोबर भी खिलाइए। शायद आप लोगों के

शास्त्र में और कोई भोजन रह ही नहीं गया है। इसी कारण से आप लोगों के दिमाग़ की बनावट भी विचित्र है।' ख़ैर, पंडित जी ने दवा दी। कहा कि अदरख के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। ख़ैर, साहब, फीस दी गई, किसी प्रकार वैद्य जी से पिंड छूटा। दो दिन दवा की गई। कभी-कभी तो कम अवश्य हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। सीआईडी के समान पीछा छोड़ता ही न था। वैद्य जी के यहाँ जब आदमी जाता तब कभी रविवार के कारण, कभी प्रदोष के कारण और कभी त्रिदोष के कारण दवा ही नहीं देते थे।

अब वैसी बेचैनी नहीं रह गयी थी, पर बलहीन होता गया। खाना-पीना भी ठीक मिलता ही न था। चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन को मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग़ चाटती थी अधिक। कभी-कभी दूर-दूर से रिश्तेदार भी आते थे। और सब लोग डॉक्टरों को गाली देकर और मुझे बिना मांगी सलाह देकर चले जाते थे। मैं चारपाई पर 'इंटर्न' था। आख़िर मेरा विचार हुआ कि फिर डॉक्टर साहब की याद की जाए। जिस समय मैं यह ज़िक्र कर रहा था एक 'कांग्रेसमैन' बैठे हुए थे। यह सज्जन अभी जेल से लौटे थे। मुझे देखने के लिए तशरीफ़ लाए थे। बोले, 'साहब, आप लोगों को देश का हर समय ध्यान रखना चाहिए। ये डॉक्टर सिवा विलायती दवाओं के ठीकेदार के और कुछ नहीं होते। इनके कारण ही विलायती दवाएँ आती हैं। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को दिखलाइए।' ऐसी खोपड़ी वालों से मैं क्या बहस करता? मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने देख ही लिया। कुछ और रुपयों पर ग्रह आया होगा, हकीम भी सही। एक की सलाह से मसीहा-ए-हिंद, बुकारते जमाँ, सुकरातुश्शफा जनाब हकीम आलुए बुखारा साहब के यहाँ आदमी भेजा। आप फौरन तशरीफ़ लाए। इस ज़माने में भी जब तेज़-से-तेज़ सवारियों का प्रबंध सभी जगह मौजूद है, आप पालकी में चलते हैं। मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि पालकी रख दी जाती है अथवा कहार कंधे पर ले लेता है और हकीम साहब उसमें टहला करते है। मेरा मतलब यह है कि जब किसी के यहाँ आप बुलाए जाते हैं तब पालकी के भीतर बैठकर आप जाते हैं।

हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का ज़िक्र और अपनी बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक

और उनके रहन-सहन तथा फैशन का ज़िक्र न करना मुझसे न हो सकेगा। सर्दी बहुत तेज़ नहीं थी। बनारस में यों भी तेज़ सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़ा पहनने का समय आ गया था। परंतु हकीम साहब चिकन का बंददार अंगा पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी। पाँव में पाजामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पाजामा बनने वाला था, परंतु दर्जी ईमानदार था। उसने कपड़ा चुराया नहीं, सबका सब लगा दिया, अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो और दर्जी ने कुछ कतर-ब्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्ली वाला था, मोजा नहीं था। रूमाल इतना बड़ा था कि अगर उसमें कसीदा कढ़ा न होता तो मैं समझता कि यह रूमाल मुँह अथवा हाथ पोंछने के लिए नहीं, तरकारी बांधने के लिए है। हकीम साहब की दाढ़ी के बाल ठुड्डी के नोक ही पर इकट्ठे हो गए थे। मालूम होता था कि हज़ामत बनाने का बुरुश है। हकीम साहब दुबले-पतले इतने थे कि मालूम पड़ता था, अपनी तन्दुरुस्ती आपने अपने मरीज़ों में बाँट दी है। हकीम साहब में नज़ाकत भी बला की थी। रहते थे बनारस में, मगर कान काटते थे लखनऊ के। आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े अंदाज़ से दिया और बोले, 'मिजाज़ कैसा है?' मैंने कहा, 'मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतज़ार था। अब यह ज़िन्दगी आपके ही हाथों में है।' हकीम साहब ने कहा, 'या रब! आप तो ऐसी बातें करते हैं गोया ज़िन्दगी से बेज़ार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ़्तगू भी कोई करता है। मरें आपके दुश्मन। नब्ज़ तो दिखलाइए। ख़ुदाबंद करीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफूचक्कर होगा।' मैंने कहा, 'आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस में ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है, इसीलिए आपको तकलीफ़ दी है।'

दस मिनट तक हकीम साहब ने नब्ज़ देखी। फिर बोले, 'मैं यह नुस्खा लिखे देता हूँ। इसे इस वक़्त आप पीजिए, इंशाअल्लाह ज़रूर शफ़ा होगी। मैंने बग़ौर देख लिया। लेकिन आपका मेदा साफ़ नहीं है और सारे फ़साद की बुनियाद यही है।' मैंने कहा, 'तो बुनियाद उखाड़ डालिए। किस दिन के लिए छोड़ रहे हैं।' हकीम आलू बुखारा बोले, 'तो आप मुसहिल ले लीजिए। पाँच रोज़ तक मुंजिज़ पीना होगा, इसके बाद मुसहिल। इसके बाद मैं एक माजून लिख

दूंगा। उसमें जोफ़ दिल, जोफ़ दिमाग़, जोफ़ मेदा, जोफ़ चश्म, हर एक की रियायत रहेगी।' मुझसे न रहा गया। मैं बोला, 'कई जोफ़ आप छोड़ गए, इसे कौन अच्छा करेगा।' हकीम साहब ने कहा, 'जब तक मैं हूँ, आप कोई फ़िक्र न कीजिए।' एक सज्जन ने उनके हाथों में फीस रखी। हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठे। उठते-उठते बोले, 'ज़रा एक बात का ख़याल रखिएगा कि आजकल दवाइयाँ लोग बहुत पुरानी रखते हैं। मेरे यहाँ ताज़ा दवाइयाँ रहती हैं।' मैंने उनकी दवा उस दिन पी। वह कटोरा भर दवा जिसकी महक रामघाट के सिवर से कंपिटीशन के लिए तैयार थी, किसी प्रकार गले के नीचे उतार गया, जैसे अहल्कार लोग अंग्रेजों की डाँट निगल जाते हैं। दूसरे दिन मुंजिज़ आरंभ हुआ। उसका पीना और भी एक आफ़त थी। मालूम पड़ता था, भरतपुर के क़िले पर मोरचा लेना है। मेरी इच्छा हुई कि उठाकर गिलास फेंक दूँ, पर घरवाले जेल के पहरुओं की भाँति सिर पर सवार रहते थे। चौथे दिन मुसहिल की बारी आई। एक बड़े-से मिट्टी के बधने से दवा मुझे पीने को दी गयी। शायद दो सेर के लगभग रही होगी। एक घूँट गले के नीचे उतरा होगा कि जान-बूझकर मैंने करवा गिरा दिया। बधना गिरते ही अफसल प्रेमी के हृदय की भाँति चूर-चूर हो गया और दवा होली के रंग के समान सबकी धोतियों पर जा पड़ी। उस दिन के बाद से हकीम साहब की दवा मुझे पिलाने का फिर किसी को साहस न हुआ। खेद इतना ही रह गया कि उसी के साथ हकीम साहब वाला माजून भी जाता रहा।

दर्द फिर कम हो चला। परंतु दुर्बलता बढ़ती जाती थी। कभी-कभी दर्द का दौरा अधिक वेग से हो जाता था। अब लोगों को विशेष चिंता मेरे संबंध में नहीं रहती थी। कहने का मतलब यह है कि लोग देखने-सुनने कम आते थे। वही घनिष्ठ मित्र आते थे। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध में विशेष चिन्ता होने लगी। कोई कहता कि लखनऊ जाओ, कोई एक्स-रे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक नेचर-क्योर वाले ने कहा कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए, एक हफ़्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डॉक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा, 'देखिए साहब! आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।' मैं बीच में बोल उठा, 'समझदार न होता तो भला आपको कैसे

यहाँ बुलाता।' डॉक्टर महोदय ने कहा, 'दवा तो नेचर की सहायता करने के लिए होती है। आप कुछ दिनों तक अपना 'डायट' बदल दीजिए। मैंने इसी डायट पर कितने ही रोगियों को अच्छा किया है। मगर हम लोगों की सुनता कौन है। असल में आप में विटामिन 'एफ' की कमी है। आप नीबू, नारंगी, टमाटो, प्याज, धनिया के रस में सलाद भिगोकर खाया कीजिए। हरी-भरी पत्तियाँ खाया कीजिए।' मैंने पूछा, 'पत्तियाँ खाने के लिए पेड़ पर चढ़ना होगा। अगर घास बतला दें तो अच्छा हो। ज़मीन पर ही मिल जाएगी।'

इसी प्रकार जो आता इतनी हमदर्दी दिखलाता था कि एक डॉक्टर, हकीम या वैद्य अपने साथ लेता आता था। खाने के लिए साबूदाना ही मेरे लिए अब न्यामत थी। ठंडा पानी मिल जाता था, यह परमात्मा की दया थी। तीन बजे एक पंडित जी महाराज आकर एक पोथी में से बड़-बड़ पाठ किया करते थे और मेरा मगज खाते थे। शाम को एक पंडित और आकर मेरे हाथ में कुछ धूल रख जाते कि महामृत्युंजय का प्रसाद है। इसी बीच में मेरी नानी की मौसी मुझे देखने आईं। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोलीं, 'मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।' मैंने पूछा, 'यह ऊपरी खेल क्या है, नानीजी।' बोलीं, 'बेटा, सब कुछ किताब में ही थोड़े लिखा रहता है। यह किसी चुड़ैल का फसाद है।' मेरी स्त्री और माता की ओर दिखाकर कहने लगीं, 'देखो ना, इसकी बरौनी कैसी खड़ी है। कोई चुड़ैल लगी है। किसी को दिखा देना चाहिए।' मैंने कहा, 'डॉक्टर तो मेरी जान के पीछे लग गए हैं! क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर होगी।' जब सब लोग चले गए तब मेरी स्त्री ने कहा, 'तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है। कुछ खाने की दवा तो देंगे नहीं।' मैंने कहा, 'तुम लोगों को जो कुछ करना है करो, मगर मेरे पास किसी को मत बुलाना। कोई ओझा या भूत का पचड़ा मेरे पास लेकर आया तो वही सन दो में मुज़फ्फरपुर सम्मेलन में जो चप्पल पहनकर गया था उसी से मैं उठकर मरम्मत करने लगूंगा।' श्रीमती जी बोलीं, 'अजी वह कोई ओझा थोड़े ही हैं। एमए पास हैं। कुछ समझा होगा तभी तो यह काम करते हैं। कितनी स्त्रियाँ रोज़ उनके पास जाती हैं, कितने पुरुष जाते हैं। बड़े वैज्ञानिक ढंग से उन्होंने इसका अन्वेषण किया है।' मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी

प्रकार की आशा क्या करता। पर बीच-बीच में दवा भी हो जाती थी। अंत में मेरे साले साहब ने बड़ा ज़ोर दिया कि यह सब झेलना इसीलिए है कि तुम ठीक दवा नहीं करते। होमियोपैथी चिकित्सा शुरू करो, सारी शिकायत गंजों के बाल की तरह ग़ायब हो जाएगी। मैंने भी कहा, 'मुर्दे पर जैसे बीस मन वैसे पचास। ऐसा न हो कि कोई कह दे कि अमुक सिस्टम का इलाज छूट गया।' अब राय होने लगी कि किस होमियोपैथ को बुलाया जाए। हमारे मकान से कुछ दूरी पर होमियोपैथ डाकिया था। दिनभर चिट्ठी बाँटता था, सवेरे और शाम दो पैसे पुड़िया दवा बाँटता था। सैकड़ों मरीज़ उसके यहाँ जाते। बड़ी प्रैक्टिस थी। एक और होमियोपैथ से चार-छह आने पैदा कर लेते थे। एक मास्टर भी थे जो कहा करते थे कि सच पूछो तो जैसी होमियोपैथी मैंने स्टडी की है, किसी ने नहीं की। कुछ बहस के बाद एक डॉक्टर का बुलाना निश्चित हुआ। डॉक्टर महोदय आए। आप भी बंगाली थे। आते ही सिर से पाँव तक मुझे तीन-चार बार ऐसे देखा मानो मैं हानोलूलू से पकड़कर लाया गया हूँ और खाट पर लिटा दिया गया हूँ। इसके पश्चात मेडिकल सनातन-धर्म के अनुसार मेरी जीभ देखी। फिर पूछा, 'दर्द ऊपर से उठता है, कि नीचे से, बाएँ से कि दाएँ से, नोचता है कि कोंचता है, चिकोटता है कि बकोटता है, मरोड़ता है कि खरबोटता है।' मैंने कहा कि मैंने दर्द की फिल्म तो उतरवाई नहीं है। जो कुछ मालूम होता है, मैंने आपसे कह दिया। डॉक्टर महोदय बोले, 'बिना सिमटाम के देखे कैसे दवा देने सकता है। एक-एक दवा का भेरियस सिमटाम होता है।' फिर मालूम नहीं कितने सवाल मुझसे पूछे। इतने सवाल तो आईसीएस 'वाइवावोसी' में भी नहीं पूछे जाते। कुछ प्रश्न यहाँ अवश्य बतला देना चाहता हूँ। मुझसे पूछा, 'तुम्हारे बाप के चेहरे का रंग कैसा था। कै बरस से तुमने सपना नहीं देखा। जब चलते हो तब नाक हिलती है या नहीं। किसी स्त्री के सामने खड़े होते हो तब दिल धड़कता है कि नहीं? जब सोते हो तब दोनों आँखें बंद रहती हैं कि एक। सिर हिलाते हो तो खोपड़ी में खटखट की आवाज़ आती है कि नहीं।' मैंने कहा, 'आप एक शॉर्टहैंड राइटर भी साथ लेकर चलते हैं कि नहीं। इतने प्रश्नों का उत्तर देना मेरे लिए असंभव है।'

फिर डॉक्टर बाबू ने पचीसों पुस्तकों का नाम लिया और बोले, 'फेरिंगटन यह कहते हैं, नैश यह कहते हैं, क्लार्क के हिसाब से यह

दवा होगी।' मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है। वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डॉक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, कहा, 'ज़रा मुँह तो देखूँ।' मैंने कहा, 'मुँह-जीभ जो चाहे देखिए।' देखकर बड़े ज़ोर से हँसे। मैं घबराया। ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता पढ़ने के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डॉक्टर बोले, 'किसी डॉक्टर को यह सूझी नहीं। तुम्हें 'पाइरिया' है। उसी का ज़हर पेट में जा रहा है और सब फसाद पैदा कर रहा है।' मैंने कहा, 'तब क्या करूँ?' डॉक्टर साहब ने कहा, 'इसमें करना क्या है? किसी डेंटिस्ट के यहाँ जाकर सब दाँत निकलवा दीजिए।' मैंने अपने मन में कहा, 'आपको तो यह कहने में कुछ कठिनाई ही नहीं हुई। गोया दाँत निकलवाने में कोई तकलीफ़ ही नहीं होती।' ख़ैर, रातभर मैंने सोचा। मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डॉक्टर ठीक कहता है। डेंटिस्ट के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलाया कि तीन रुपए फी दाँत तुड़वाने में लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छानबे रुपए लगेंगे। मग़र मैं आपके लिए छह रुपए छोड़ दूंगा। इसके अतिरिक्त दाँत बनवाई डेढ़ सौ अलग। यह सुनकर पेट के दर्द के साथ-साथ सिर में भी चक्कर आने लगा। मग़र मैंने सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ। इतना और ख़र्च करो। श्रीमती से मैंने रुपए मांगे। उन्होंने पूछा, 'क्या होगा?' मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोलीं, 'तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई है क्या? किसी कवि का तो साथ नहीं हो गया है कि ऐसी बातें सूझने लगी हैं। आज कोई कहता है कि दाँत उखड़वा डालो। कल कोई कहेगा बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डॉक्टर कहेगा कि नाक नोचवा डालो, आँख निकलवा दो। यह सब फजूल है। तुम सुबह टहला करो, किसी एक भले डॉक्टर की दवा करो। खाना ठिकाने से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे। मैंने सबका इलाज भी देख लिया।' मैंने कहा, 'तुम्हें अपनी ही दवा करनी थी तो इतने रुपए क्यों बरबाद कराए?'

कुछ दिन के बाद मैंने समझा कि स्त्रियों में भी बुद्धि होती है। विशेषत: बीस साल की आयु के बाद।

आशा का एक कुजवन

'वंशीवट'– नाम के अनुरूप एक ऐसा संस्थान, जिसने इस गाढ़े समय में थकी-हारी मनुष्यता को छाँव देने का प्रयास किया। एक ऐसी संस्था, जिसके हर सदस्य के हाथ इस वक़्त क़लम छोड़कर कराहती मनुष्यता के आँसू पोंछने में लगे हैं। यूँ तो यह संस्था इंदौर और मध्य प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में साहित्यिक गतिविधियों के प्रति समर्पित है। गीत-ग़ज़ल-कविता के संस्कार आने वाली पीढ़ियों में रोपने की कोशिश कर रही है। मग़र इस वक़्त इस संस्था का हर सदस्य इस महामारी के झंझावात से मनुता के बीज को बचाए रखने का प्रयास कर रहा है। वंशीवट ने इंदौर और आस-पास के क्षेत्रों में किराए पर मुफ़्त ऑक्सीजन सिलेंडर तथा रीफिलिंग की सुविधा उपलब्ध कराई है। अपने सामर्थ्यानुसार कोरोना के मरीज़ों को डॉक्टरी सलाह और हॉस्पिटल की व्यवस्था उपलब्ध कराने का प्रयास भी यह संस्था लगातार कर रही है। इसके साथ ही जिन परिवारों को इस समय किसी भी कारणवश भोजन की समस्या हो रही है, उनके लिए भोजन पहुँचाने का काम भी इन कर्मवीरों ने अपने ज़िम्मे लिया है। ज़्यादातर लोग, जो कोरोना के लक्षणों से घबराकर अस्पताल की ओर भागने लगते हैं, उन्हें घर पर रहकर बीमारी के उपचार के लिए आवश्यक सलाह उपलब्ध कराई जा रही है और वंशीवट के प्रयासों से बीस से अधिक लोग बिना अस्पताल गए ही इस बीमारी से जंग जीतने में सफल हुए हैं।

कुल पचास लोगों की टीम अमन अक्षर, कौस्तुभ माहेश्वरी, विक्रम तथा हिमांशु मंगल वर्मा के नेतृत्व में सराहनीय काम कर रही है। कविग्राम की ओर से 'मनुष्य' को मनुष्य मात्र मानकर उसकी सेवा करने वाले क़लम के इन सिपाहियों को सलाम!

कविग्राम

विश्वास बहुत है

मैंने सुना था कि जब रामसेतु का निर्माण हो रहा था तो एक नन्हीं गिलहरी भी समुद्रतट की रेत को अपनी देह से लपेट कर समुद्र में बहा रही थी। मुझे नहीं पता कि इस कथा में कितनी सच्चाई है, लेकिन अब मैंने अपनी आँखों से देखा कि जब कोविड का घिनौना कीड़ा मौत का नंगा नाच कर रहा था तब कुछ नन्हीं हथेलियाँ उसके प्रकोप से त्रस्त मनुष्यों को सहारा दे रही थीं। मैं कभी भी नामोल्लेख की प्रवृत्ति में विश्वास नहीं रखता, लेकिन इस बार मैं इन सब देवदूतों का नाम लिखकर कविग्राम के इन पृष्ठों को पवित्र करना चाहता हूँ। एकाध नाम नहीं है। कवि कुनबे के लगभग दो सौ साथी दिन-रात एक करके अपने-अपने सामर्थ्यानुसार इस संकट से उबारने में लोगों की मदद कर रहे हैं। मैंने उन सबके नाम यहाँ लिखे हैं जो इस दौरान प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरे सम्पर्क में आए हैं। इसके अतिरिक्त भी इतने ही कवि-कवयित्रियाँ और होंगे, जो बिना किसी क्रेडिट की आस रखे अनवरत समस्या तथा समाधान के मध्य सेतु की तरह बिछे रहे हैं। डॉ. रुचि चतुर्वेदी, प्रीति केसरवानी, प्राची रंधावा, अर्चना पाण्डा, इति शिवहरे, विख्यात मिश्रा, ललित तिवारी, अवनीश त्रिपाठी, शालिनी सरगम, विनोद पाल और सान्या राय ने तो इस दौरान मुझे निष्काम कर्म का सही अर्थ सिखा दिया।

मुझे यह भी ख़बर मिली है कि कुछ लोग इस अभियान में दिल की जगह दिमाग़ से काम कर रहे हैं और लोगों को मदद पहुँचाने की बजाय केवल क्रेडिट बटोरने में लगे हैं। ऐसे लोगों को मैं अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामना देता हूँ तथा जी-जान से लोगों की मदद में जुटे लोगों को यह आश्वासन देता हूँ कि छिलका गिरि के साथ तुलता ज़रूर है, लेकिन उसके भाग्य में किसी का कौर बनने की ख़ुशी कभी नहीं आती, वह अन्ततः कचरे में ही पड़ा मिलता है।

अत: किसी भी आरोप, आक्षेप अथवा अतिक्रमण से प्रभावित हुए बिना केवल अपने काम पर ध्यान दो, क्योंकि हमारी जवाबदेही केवल अपनी आत्मा के प्रति है। यह भी सत्य है कि लगातार फोन करने के कारण कुछ लोगों ने हमारे फोन उठाने बन्द कर दिये हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि आपके जुनून की गति से कदमताल करने वाले लोग भी कम नहीं हैं।

अब मैं जिन लोगों के नाम लिख रहा हूँ, न तो उन्हें अपने नाम की कोई आकांक्षा है, न ही उनमें से किसी को इस सूची में होने या न होने से कोई फर्क पड़ता है, किन्तु फिर भी अपनी स्मरण क्षमता के आधार पर कुछ उदारमना मनुष्यों का नाम लिखकर संतोष प्राप्त करना चाहता हूँ। इस क्रम में सर्वश्री आरोही, आभा द्विवेदी, अभय कुमार, अभय सिंह निर्भीक, अभिराज पंकज, अभिषेक भूदेव, अभिषेक शुक्ल, आदर्श जौनपुरी, आदित्य रहबर, आफ़िया बानो, अजातशत्रु, अजय अंजाम, अजय हिन्दुस्तानी, आकांक्षा द्विवेदी, आकृति विज्ञा अर्पण, अमन जादौन, अम्बरीश जैन, अम्बरीश श्रीवास्तव, अनामिका जैन अम्बर, आँचल जैन, अनिल अग्रवंशी, अंजू जैन, अंकिता सिंह, अंकुर, अंकुश कुमार, अणु शक्ति सिंह, अनुगूंज, अनुज त्यागी, अनूप भारतीय, अपूर्व, अपूर्वा, डॉ. अर्चना सक्सेना, अर्पण जैन, आर्य विक्रम, आर्यन राज, असीम शुक्ल, अशोक सुन्दरानी, अतुल कुलश्रेष्ठ, आयुषी राखेचा, बलजीत कौर तन्हा, भावना शर्मा, भावना तिवारी, भूमिका जैन, भूमिका जोशी, चान्दनी पाण्डेय, चिराग़ बरेलवी, डी के जैन मित्तल, दमदार बनारसी, दीपक गुप्ता, दीपक पारीक, दीपक सैनी, दीपाली जैन, दीपिका माही, देवदत्त देव, देवेन्द्र त्रिपाठी, धारा पाण्डेय, धर्मेंद्र सिंह सोलंकी, धीरज जैन, धीरेन्द्र सिंह तोमर, ध्रुवेन्द्र भदौरिया, दिलीप सिंह राठौर, दिनेश दिग्गज, दिनेश रघुवंशी, दिव्या दुबे नेह, दुर्गेश तिवारी। एकता भारती, गौरव दुबे, गौरव द्विवेदी, गीता श्री, गीता सिंह, गीतांजलि व्यास, गिरिराज गुप्ता, गौरव चौहान, गोविन्द द्विवेदी, गुलशन, गुनवीर राणा, ज्ञान प्रकाश आकुल, ज्ञानेन्द्र वत्सल, हेमन्त सिंह, हिमांशु बवंडर, हिमांशु भावसार, जितेन्द्र जैन, कमल आग्नेय, कमल कालू दहिया, कमलेश शर्मा, कंचन नामदेव, डॉ. काव्या मिश्रा, केसरदेव मारवाड़ी, कोमल नाज़ुक़, कोमल वाणी, कुलदीप चतुर्वेदी, कुलदीप त्रिपाठी, मधुप मोहता, मनीष भट्ट शर्मा,

मंजू शाक्या, मनमोहन मिश्रा, मनवीर मधुर, मार्कण्डेय राय, मो॰ अशरद फ़राज़, नम्रता जैन, नम्रता श्रीवास्तव, नन्दिनी श्रीवास्तव, नीर गोरखपुरी, नेहा नन्दिता मिश्रा, निपुण जैन, निरंजन पाठक, नितेश जैन, नितिन मिश्र, नितिन पारीक, नितिश कुमार, नूतन अग्रवाल ज्योति, पल्लवी कृपाल त्रिपाठी, पल्लवी विनोद, पंकज पलाश, पंकज शर्मा, पंकज सुबीर, पारस जैन, पीयूष मालवीय, पीयूष परिन्दा, पूजा वर्मा, पूनम अवस्थी, प्रबुद्ध सौरभ, प्रज्ञा मिश्रा, प्रणव द्विवेदी शुभम, प्रसेन मालवी, प्रताप सौरभ, प्रतीक गुप्ता, प्रेमा पाण्डेय, प्रिंस जैन, प्रियंका राय, प्रियांशु गजेन्द्र, प्रियांशु तिवारी, रचित दीक्षित, रागिनी तिवारी, राहुल वर्मा, राजीव राज, राजीव कुमार वर्मा, राजकुमार पथिक, रजनी अवनि, रजनीश जस, रश्मि शाक्या, रसिक गुप्ता, रवि देशवाल, रवि गोस्वामी, ऋचा जोशी, ऋचा सचान, ऋषि जायसवाल, रूपा राजपूत, सचिन दीक्षित, साक्षी चारु श्रीवास्तव, साक्षी जैन, संदीप जैन, संजना जैन, संजय शुक्ला, संक्षेप बरनवाल, सपना सक्सेना, सरगम अग्रवाल, सतीश चोपड़ा, सौम्या श्रीवास्तव, सौरभ रत्नावत, सौरभ सूर्या, सौरभ यादव, सौरभकान्त शर्मा, शम्भू शिखर, शेषनाथ यादव, शिवम खेरवार, शिवम पचौरी, श्लेष गौतम, श्रुति जैन श्री, सोनरूपा विशाल, सौरव डागर, सृष्टि सिंह, सुदीप भोला, डॉ॰ सुमन कौशिक, सुमित दिलकश, सुमित ओरछा, सुरेन्द्र शर्मा, डॉ॰ सुरीति रघुनन्दन, सूर्यप्रकाश, स्वाति ख़ुशबू, स्वाति मित्तल, स्वयम् श्रीवास्तव, उमंग गोयल, वन्दना, वाशु पाण्डेय, विजय बारूद, विजय मोदी, विजय एस कुमार, विकास रोहिल्ला, विभूति लव, विष्णु सक्सेना और वफ़ा फ़राज़ का उल्लेख करते हुए बस यह बताना चाहता हूँ कि इन सबके प्रयासों से मुझे बहुत प्रेरणा मिली और इस बात की आश्वस्ति भी हुई कि छोटी-छोटी कोशिशें करके बड़े युद्ध जीत लेने के जिस जज़्बे की हम कहानियाँ सुनते आए हैं, वे कहानियाँ हक़ीक़त में भी बदलती हैं।

इन सब मनुष्यों के दम पर मैंने महसूस किया कि जब भी मैं किसी की मदद के लिए हाथ बढ़ाता हूँ तो मेरे हाथ में से एक साथ सैंकड़ों हाथ निकल आते हैं, और मेरी छोटी-सी कोशिश को सफल करके अदृश्य हो जाते हैं।

चिराग़ जैन

ज़ंजीर खींच कर जो मुसाफ़िर उतर गये

पीड़ा इतनी बढ़ गयी है कि आँखें रोना भूल गयी हैं। शोक चेहरे का स्थायीभाव हो गया है। हर फोन कॉल मृत्यु की आहट सी जान पड़ती है। ऐसा लगने लगा है कि सबको जी भर-भर के देख लिया जाए, न जाने कब कौन साथी छूट जाए। पिछले एक महीने में इतनी बार '**श्रद्धांजलि**' शब्द लिखना पड़ा है कि कीबोर्ड को भी यह शब्द रट गया है। हमारे बीच से हमारे हँसते-खिलखिलाते साथी छूटे चले जा रहे हैं और सिर झुकाए हम काल के इस क्रूर अट्टहास को सुन-सुनकर सिहर रहे हैं। कविग्राम जब कभी यह काला पृष्ठ छापता है, तो हर बार ऐसा लगता है जैसे किसी ने हमारी एक धड़कन चुरा ली हो, लेकिन इस बार ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कोई कलेजा निकाल कर लिये जा रहा है।

मृत्यु ने वटवृक्षों से लेकर फुलवारी तक पर डाका डाला है। कविग्राम इस बवण्डर में ध्वस्त हुई हरियाली को भीगे मन से विदा करता है :

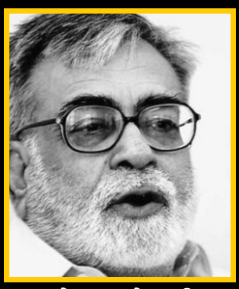

नरेन्द्र कोहली
आयु : 81 वर्ष
जन्म : 06 जनवरी 1940
निधन : 21 अप्रेल 2021

विश्वनाथ द्विवेदी
आयु : 78 वर्ष
जन्म : 15 जुलाई 1942
निधन : 27 अप्रेल 2021

मुकुन्द कौशल
आयु : 73 वर्ष
जन्म : 07 नवम्बर 1947
निधन : 5 अप्रेल 2021

अ ल वि दा

ज़हीर क़ुरैशी
आयु : 70 वर्ष
जन्म : 05 अगस्त 1950
निधन : 21 अप्रेल 2021

राजेन्द्र राजन
आयु : 68 वर्ष
जन्म : 09 अगस्त 1952
निधन : 15 अप्रेल 2021

किरण मिश्र
आयु : 67 वर्ष
जन्म : 05 जुलाई 1953
निधन : 16 अप्रेल 2021

कमलेश द्विवेदी
आयु : 60 वर्ष
जन्म : 25 अगस्त 1960
निधन : 17 अप्रेल 2021

वाहिद अली वाहिद
आयु : 59 वर्ष
जन्म : 15 दिसम्बर 1961
निधन : 20 अप्रेल 2021

राजेन्द्र शर्मा
आयु : 52 वर्ष
जन्म : 14 दिसम्बर 1968
निधन : 25 अप्रेल 2021

अ ल वि दा

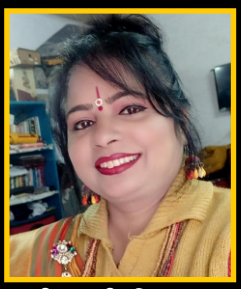

सीमाक्षी विशाल
आयु : 40 वर्ष
जन्म : 23 मई 1970
निधन : 17 अप्रेल 2021

रूपेश राठौर
आयु : 38 वर्ष
जन्म : 24 दिसम्बर 1982
निधन : 28 अप्रेल 2021

देवकीनन्दन जांगिड़
आयु : 38 वर्ष
जन्म : 01 फरवरी 1983
निधन : 23 अप्रेल 2021

प्रीतेश जैन
आयु : 34 वर्ष
जन्म : 31 अक्टूबर 1986
निधन : 27 अप्रेल 2021

प्रज्ञा वाजपेयी
आयु : 26 वर्ष
जन्म : 08 सितम्बर 1994
निधन : 23 अप्रेल 2021

कविग्राम

'**कविग्राम**' सम्पूर्ण कवि-सम्मेलन जगत् का एक समृद्ध मंच है। मासिक व्हाट्सएप-पत्रिका के अतिरिक्त कवि-सम्मेलन सम्बन्धी समस्त गतिविधियों के संचालन तथा अपनी ऐतिहासिक धरोहर के दस्तावेज़ीकरण में कविग्राम अनवरत कर्मरत है। कविग्राम से जुड़ें तथा समान अभिरुचि के मित्रों को इस मंच से जोड़ें।

कविग्राम के पुराने अंक पढ़ने के लिये स्पर्श करें

आगामी अंक

कविग्राम का जून अंक केन्द्रित होगा उन रचनाओं पर, जिन्होंने लोकप्रियता का चरम छुआ, लेकिन उनके रचयिता का नाम कहीं ग़ुम हो गया।